वाचन के प्रकार– हिन्दी में वाचन की क्रिया दो प्रकार से सम्पन्न की जाती है। वे हैं- सस्वर वाचन एवं मौन वाचन। पुनः इन दोनों प्रकार के वाचन के भी भेद किये जाते हैं, जिन्हें तालिका के माध्यम से स्पष्ट किया जा रहा है-

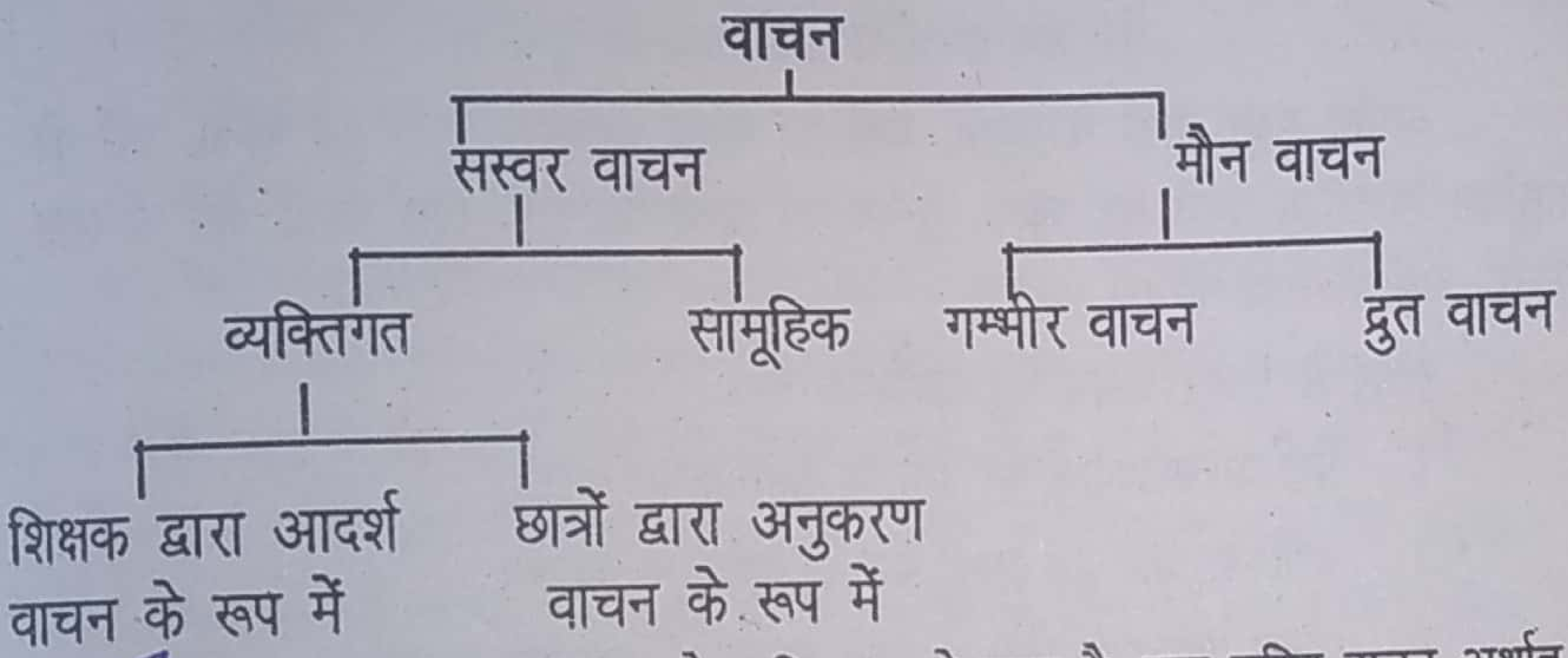

सस्वर वाचन– सस्वर वाचन जैसा कि नाम से स्पष्ट है, स्वर सहित वाचन अर्थात् शब्दों का उच्चारण करते हुए पढ़ना। इसमें ध्वनि प्रतीकों को देखते हुए वाणी द्वारा उन ध्वनियों का उच्चारण किया जाता है। इस प्रक्रिया में लिपि, ध्वनि एवं अर्थ तीनों ही एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं अर्थात् सर्वप्रथम छात्र लिपि को पहचानने का प्रयास करता है। यह लिपि एक विशिष्ट ध्वनि से युक्त होती है जिसका एक विशिष्ट निहितार्थ होता है। हिन्दी की प्रारम्भिक कक्षाओं में सस्वर वाचन की विशेष उपयोगिता देखी जाती है। सस्वर वाचन का पर्याप्त अभ्यास हो जाने के पश्चात् ही छात्र धीरे-धीरे पठन क्रिया की ओर बढ़ता है। वाचन का जितना अधिक अभ्यास कराया जायेगा उतनी ही उसमें स्पष्टता एवं दक्षता देखी जा सकती है। सस्वर वाचन की विशिष्टताओं के सम्बन्ध में शबर भाष्य, मीमांसा सूत्र की उक्ति में स्पष्ट दिया गया है-

'श्रोते ग्रहणे हि अर्थे लोके शब्द शब्दः प्रसिद्धः' अर्थात् किसी भी शब्द का सही अर्थ तभी ग्राह्य होगा जबकि वह शुद्ध उच्चारण के साथ ग्रहण किया जाये। वाचन किस प्रकार से किया जाना चाहिए इस सम्बन्ध में याज्ञवल्क्य की शिक्षा के अन्तर्गत कहा गया है कि-

'मधुरं च न चाव्यक्तं, व्यक्तं चापि न पीडितम्।
सनाथैकस्य देशस्य न वर्णाः संकरं गताः।।
यथा सुमन्त नागेन्द्रः पदात्पदं निधापयेत्।
एवं पद पदाद्यतं दशर्नीय पृथक-पृथक।।

अर्थात् वर्णों का उच्चारण मधुर एवं स्पष्ट हो, वह उच्चारण अन्य वर्णों से अलग एवं निरपेक्ष हो। जिस प्रकार हाथी एक पैर को रखने के पश्चात् दूसरा पैर रखने में पूर्ण सावधानी बरतता है, उसी प्रकार उच्चारण करते समय प्रत्येक पद को सावधानीपूर्वक, पृथक्-पृथक् एवं स्पष्ट रूप से उच्चारित करना चाहिए।

पाणिनीय शिक्षा के अंतर्गत वाचन (पठन) से सम्बन्धित 6 गुण आवश्यक बताए गए हैं-

माधुर्यअक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्य लय समर्थं च षडेते पाठकाः गुणाः।।

अर्थात् मधुर वाणी में पढ़ना, वर्णों का स्पष्ट उच्चारण करते हुए पढ़ना, पदों को समुचित विभाजित करते हुए पढ़ना, सुन्दर एवं शुद्धोच्चारण के साथ पढ़ना, धैर्य के साथ पढ़ना, लय के साथ पढ़ना।

संक्षेप में सस्वर वाचन हेतु आवश्यक है-

1. पूर्ण आत्मविश्वास एवं धैर्य के साथ वाचन करना।
2. वर्णों का सही एवं स्पष्ट ढंग से उच्चारण करना।
3. उचित लय तथा गति के साथ वाचन का अभ्यास करना।
4. वाचन करते समय कक्षा के आकार तथा दूरी को ध्यान में रखते हुए वाचन करना।
5. वाचन संबंधी नियम जैसे विरामादि चिन्ह, यति, गति, स्वराघात, बलाघात को ध्यान में रखना।
6. प्रसंगानुसार भावाभिव्यक्ति की स्पष्टता को ध्यान में रखते हुए वाचन करना।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर सस्वर वाचन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते हैं।

सस्वर वाचन के उद्देश्य- बहुत से लोग कभी-कभी मौखिक अभिव्यक्ति को वाचन का ही पर्याय मानते हैं, किन्तु उनकी यह धारणा भ्रामक है। मौखिक अभिव्यक्ति में किसी भी

प्रकार के नियमों की बाध्यता नहीं होती लेकिन सस्वर वाचन में शुद्ध उच्चारण के साथ-साथ वाचन सम्बन्धी समस्त नियमों को भी ध्यान में रखना आवश्यक समझा जाता है। मौखिक अभिव्यक्ति में बोलने की गति पर भी कोई नियंत्रण नहीं होता, यह बोलने वाले पर निर्भर करता है कि वह कितनी शीघ्रता अथवा मन्द गति से बोलते हुए अपने विचार व्यक्त करे। किन्तु वाचन करते हुए गति एवं स्वर को भी ध्यान में रखना आवश्यक होता है। सस्वर वाचन द्वारा छात्रों में उच्चारण की शुद्धता देखी जाती है। उच्चारण की शुद्धता, स्पष्टता एवं प्रवाह से उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न होता है। यह आत्मविश्वास उनके व्यक्तित्व को निखारने में सहायक होता है। अतएव सस्वर वाचन शिक्षण के उद्देश्य हैं-

1. छात्रों को ध्वनियों के सही रूप का ज्ञान प्रदान करते हुए शुद्धोच्चारण से परिचित कराना।
2. छात्रों को वाक्य में प्रयुक्त यति, गति, विरामादि चिन्हों की सही जानकारी देना।
3. उनमें सम्यक् प्रवाह, उतार-चढ़ाव लाने की क्षमता विकसित करना।
4. छात्रों को वाचन के माध्यम से वाक्य रचना सम्बन्धी नियमों की जानकारी देना।
5. वाचन के साथ-साथ पठन सामग्री के केन्द्रीय भाव को ग्रहण कर सकने की क्षमता का विकास करना।

शिक्षण प्रक्रिया में सस्वर वाचन के दो रूप देखे जा सकते हैं।

अ- व्यक्तिगत रूप से वाचन

ब- सामूहिक रूप से वाचन।

अ. व्यक्तिगत वाचन- व्यक्तिगत वाचन का अभिप्राय है 'वैयक्तिक रूप से किया जाने वाला वाचन।' वैयक्तिक वाचन शिक्षक द्वारा भी किया जाता है तथा छात्र के द्वारा भी किया जाता है। जब शिक्षक द्वारा छात्रों के सम्मुख वाचन किया जाता है, तो वह 'आदर्श वाचन' के रूप में जाना जाता है। शिक्षक द्वारा प्रस्तुत वाचन में शिक्षक का पूरा प्रयास रहता है कि वह वाचन सम्बन्धी समस्त नियमों को ध्यान में रखते हुए छात्रों को उस उत्तम अथवा आदर्श वाचन से परिचित कराये जो छात्रों के लिए अनुकरणीय हो तथा हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो। जब वही वाचन छात्र द्वारा किया जाता है तो वह 'अनुकरण वाचन' कहलाता है अर्थात् वाचन में छात्र से यह अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षक द्वारा किये गये आदर्श वाचन का अनुकरण करे। अनुकरण वाचन में की गई अशुद्धियों का शिक्षक तत्काल संशोधन भी करते चलता है।

ब. सामूहिक वाचन- सामूहिक वाचन का आशय है, समूह में स्वर सहित उच्चारण करते हुए वाचन का अभ्यास करना। इसे 'समवेत वाचन' के नाम से भी जाना जाता है। समवेत वाचन का अभ्यास प्रारम्भिक कक्षा के छात्रों के लिए अधिक उपयोगी देखा जाता है। इसकी सहायता से न केवल वाचन का अभ्यास ही संभव होता है वरन् पाठ्य पुस्तक की सुन्दर कविताओं, गीतों, पद्यों आदि को सरलता से अल्प समय में कंठस्थ भी कराया जा

Scanned with CamScanner

सकता है। इसके साथ ही ऐसे छात्र जो वैयक्तिक वाचन में झिझक महसूस करते हैं, वे सहर्ष सामूहिक रूप के सस्वर वाचन में भाग लेते हैं। समूह में किया गया उनका प्रयास धीरे-धीरे उनके संकोच को दूर कर देता है। इसमें शिक्षक को भी अधिक श्रम नहीं करना पड़ता।

किन्तु जहाँ एक ओर सामूहिक स्वर वाचन की उपयोगिता स्वीकार की जाती है, वहीं इसकी कुछ सीमाएँ भी कही जा सकती हैं, जैसे-

1. इसके द्वारा हिन्दी शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य 'शुद्धोच्चारण की क्षमता का विकास करना' की पूर्ति सम्भव नहीं देखी जाती क्योंकि समूह में किया गया वाचन शुद्ध हो रहा है अथवा नहीं या किन छात्रों द्वारा अशुद्ध उच्चारण किया जा रहा है, इसका पता लगाना कठिन हो जाता है।

2. कभी-कभी यह भी देखने में आता है कि इसमें सभी छात्र भाग नहीं लेते हैं।

3. शिक्षक संशोधन कार्य भी सही ढंग से नहीं करा पाते।

4. वाचन सम्बन्धी नियमों का पालन भी इसमें सही ढंग से नहीं किया जा सकता है।

सस्वर वाचन सम्बन्धी दोष एवं उनके कारण- सस्वर वाचन सम्बन्धी समस्त विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए वाचन करना शिक्षक एवं छात्र दोनों के भाषा कौशल एवं भाषा के प्रति प्रेम को दर्शाता है। जिस प्रकार पाणिनीय शिक्षा के अंतर्गत वाचन सम्बन्धी गुणों की चर्चा की गई है, उसी प्रकार पाणिनीय शिक्षा में वाचन सम्बन्धी कुछ दोषों का उल्लेख किया गया है। महर्षि पाणिनी ने दोषों से युक्त वाचन करने वाले को अधम कोटि के अन्तर्गत माना है। उनके अनुसार-

गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथालिखित पाठकाः।
अनर्थज्ञोऽस्य कण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः।।

अर्थात् गाकर पढ़ना, शीघ्र से पढ़ना, सिर हिलाते हुए पढ़ना, चुपचाप पढ़ना, बिना अर्थ ग्रहण किये हुए पढ़ना, दबे स्वर में पढ़ना ये 6 प्रकार से पठन करने वाले पाठक अधम कोटि में आते हैं।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने भी वाचन सम्बन्धी कुछ दोषों का उल्लेख किया है। वे हैं- भयभीत होकर पढ़ना, संशय से पढ़ना, चिल्लाते हुए पढ़ना, अनुनासिक (नासिका के स्वर) रूप से पढ़ना, अस्पष्ट पढ़ना, नीरस रूप से पढ़ना, आतुरता से पढ़ना, स्वरहीन पढ़ना, खींच-खींच कर पढ़ना, तालुहीन की तरह पढ़ना।

जहाँ तक वाचन सम्बन्धी दोषों के कारणों का प्रश्न है, इनके सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि ये कारण हैं-

1. **अज्ञानता-** शुद्ध वाचन सम्बन्धी अज्ञानता के कारण भी बहुधा वाचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ देखी जाती है जिनका निदान छात्र एवं शिक्षक के प्रयास द्वारा सम्भव है।

2. **शुद्ध ज्ञान का अभाव-** भाषा सम्बन्धी शुद्ध ज्ञान का न होना भी वाचन सम्बन्धी दोषों को बढ़ावा देता है। इसमें शिक्षक का निर्देशन बहुत सहायता पहुँचाता है।

Scanned with CamScanner

3. उच्चारण में शीघ्रता– कभी-कभी वाचन में दोषों की प्रचुरता उच्चारण में शीघ्रता के कारण भी देखी जाती है। इस दोष के निवारण के लिए शिक्षक द्वारा किया गया आदर्श वाचन बहुत सहायता पहुँचाता है।

4. शुद्ध वातावरण का अभाव– वाचन के लिए शुद्ध वातावरण का होना बहुत आवश्यक समझा जाता है। यदि चारों तरफ शुद्ध भाषा का वातावरण होगा तो निश्चित रूप से उसका प्रभाव छात्र के वाचन पर भी देखा जा सकेगा।

5. प्रान्तीय प्रभाव– कभी-कभी वाचन सम्बन्धी दोष का कारण प्रान्तीय प्रभाव भी देखा जाता है। छात्र जब सामान्य बोलचाल में प्रान्तीय भाषा का प्रयोग करता है तो उसमें अभ्यस्त होने के कारण वह वाचन में भी उसी प्रकार के शब्दों का प्रयोग करता है जो वाचन को दोषपूर्ण बना देते हैं।

6. दृष्टि दोष– कभी-कभी दृष्टि-दोष को भी वाचन में की गई अशुद्धियों के कारण के रूप में देखा जाता है।

7. वाणी सम्बन्धी दोष अथवा स्नायु सम्बन्धी दोष– वाणी सम्बन्धी दोष जैसे हकलाना, तुतलाना, काँपते हुए बोलना, सिर हिलाते हुए वाचन करना इत्यादि ऐसे दोष देखे जाते हैं जिनके कारण छात्र का वाचन दोषपूर्ण हो जाता है। इनके समाधान हेतु चिकित्सीय सलाह की आवश्यकता होती है।

Scanned with CamScanner